ईर्ष्या द्वेष की अग्नि में जल रही दुनिया

ईर्ष्या ने अनेकों के जीवन नष्ट किये होंगे, ईर्ष्या की अग्नि में कोटि-कोटि मनुष्यों की सुख-शांति जलकर राख हो गई होगी, ईर्ष्या ने कितनों की प्रगति का मार्ग अवरुद्ध किया होगा, ईर्ष्या ने कितनों के सुहाग नष्ट किये होंगे, कितनों के घर उजाड़े होंगे और कितनों की साधनाएं नष्ट की होगी! यह ईर्ष्या की अग्नि, काम अग्नि का ही सूक्ष्म अंश है। जो आत्माएं कामाग्नि को शीतल करती हैं, उनकी ये ईर्ष्या की अग्नि भी शांत हो जाती है। योगियों को तो अपनी बुद्धि में इसकी लपटों को प्रवेश ही नहीं होने देना चाहिए।

जैसे जंगल में बाँस के वृक्ष आपस में टकराकर जलकर नष्ट हो जाते हैं, वैसे ही कई मनुष्य ईर्ष्या-वश आपस में टकराकर नष्ट हो जाते हैं। ईर्ष्या ने धर्मों व संगठनों के बल को नष्ट किया। आप चाहे किसी अस्पताल में जाएं, चाहे कॉलेज में, व्यापारी वर्ग पर ध्यान दें, चाहे समाज सुधारक संघों पर, ईर्ष्या की उठती लपटें आपको सब जगह दिखाई देंगी। आपने देखा या सुना होगा कि दो चोर आपस में शीघ्र ही मिल जाते हैं, परन्तु एक ही शहर में रहने वाले दो विद्वान आपस में कभी नहीं मिलते। ये ईर्ष्या की ही देन है कि बुराइयों का मिलन हो रहा है और अच्छाइयों का अलगाव। जिन्हें सतत् प्रगति के पथ पर अग्रसर रहना है उन्हें ईर्ष्या का सामना तो करना ही पड़ेगा। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति मान चाहता है, उत्थान चाहता है, अवसर चाहता है और दूसरों की योग्यताओं को चुनौती भी देता है तथा अहम् वश दूसरों की स्वीकार करता। तो यदि आपके प्रति दूसरे लोग ईर्ष्या रखते हैं तो आप उसे गंभीरता से लेकर उथल-पुथल में न आ जायें। संगठन में, समानता में, ईर्ष्या का होना कोई अनहोनी बात नहीं। ईर्ष्या तो दो के बीच में भी होती है, भाई-भाई में, भाई-बहन व बहनों-बहनों में भी होती है। इसलिए आप इसे सहज भाव से लें और मिले हुए अवसरों का टीकाओं को नकारते हुए पूर्ण लाभ उठायें। यदि आप दूसरों की ईर्ष्या देखकर रूक गये तो आपकी प्रगति रूक जायेगी। परन्तु ईर्ष्या करने वाले देखते ही रह जाएं और आप उड़ जाओ।

एक व्यक्ति दूसरे की उन्नति देखकर ईर्ष्या-वश मन ही मन जल रहा था। अचानक ही एकांत में उसकी विवेक-चेतना जागी। वह सोचने लगा - क्या मेरी इस ईर्ष्या को कोई जानता भी है? क्या उस व्यक्ति को मेरी ईर्ष्या का एहसास है? उत्तर मिला नहीं। क्या मेरी ईर्ष्या उसे रोक पाई है? उत्तर मिला नहीं? तो हे पागल प्राणी, तू क्यों ईर्ष्या की लपटों में झुलस रहा है? उसे भान हुआ कि यदि तू भी कुछ करना चाहता है तो कर, दूसरों को करने से रोकने से, न वे रूकेंगे, न तू बढ़ेगा। तू तो बस स्वयं को बढ़ा, इस ईर्ष्या की अग्नि में तो तेरे चित्त की श्रेष्ठता भस्मीभूत हो जायेगी, इस प्रकार की जागृति ने उसके विवेक को निखार दिया और उसके उत्थान का द्वार सदा के लिए खुल गया।

ईश्वरीय महावाक्य है कि - जो योग्य हैं उन्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। हाँ, सबका आगे बढ़ने का मार्ग अलग-अलग है।

मनुष्य सोचता है कि ख्याति केवल मेरी ही हो और जब एक नाम प्राप्त मनुष्य दूसरे का नाम होता देखता है तो उसकी खुशी नष्ट हो जाती है। एक शहर में एक सेठ ने एक आलीशान कोठी बनाई, उसकी खुशी उसके चेहरे से फूट-फूट कर बाहर निकलने लगी। सभी उसकी महिमा के गीत गाते और वह भी अपने भाग्य को निहार-निहार फूला न समाता। परन्तु एक ही वर्ष बाद पास में ही एक-दूसरे व्यक्ति ने वैसी ही कोठी बना दी। अब इस सेठ की दशा बड़ी शोचनीय हो गई। उसका चेहरा उतर गया, वह पड़ोसी की ग्लानि करने लगा और उसका उस कोठी में रहने का सुख फीका पड़ गया। यह है ईर्ष्या का चमत्कार। ईर्ष्या-वश मनुष्य अपनी प्राप्तियों का भी आनन्द नहीं ले पाता। आगे तो सभी बढ़ रहे हैं, परन्तु वो मनुष्य जो दूसरों की उन्नति को देखना नहीं चाहता, बड़ा स्वार्थी है, उसका सारा सुख ईर्ष्या की भेंट चढ़ जाता है। परन्तु वो मनुष्य जिसका दिल विशाल है, सबके सुखों को अपना सुख व सबकी उन्नति को अपनी उन्नति मानता है, इसलिए संगठन में वह बहुत सफल हो जाता है। यदि एक व्यक्ति भाषण के माध्यम से ख्याति प्राप्त कर रहा है तो आप स्व-स्थिति के माध्यम से उसे प्राप्त करो। आपको ख्याति देर से प्राप्त होगी परन्तु यह ख्याति बड़ी सुखकारी व स्थाई होगी। भाषण आदि से या अन्य स्थूल अवसरों से प्राप्त ख्याति श्रेष्ठ स्थिति के अभाव में शीघ्र ही नष्ट होती देखी गई है। सबकी उन्नति के मार्ग अलग-अलग हो सकते हैं। आप स्वयं अपना मार्ग निर्माण करें। यह कभी न भूलो कि जो आगे बढ़े हैं उन्होंने अवश्य ही किसी न किसी क्षेत्र में मेहनत की है, सहन किया है, आलोचनाएं सुनी हैं। परन्तु यदि आप बिना मेहनत किए दूसरों से आगे बढ़ना चाहते हो तो उसका कोई अर्थ नहीं।

संगठन में, समानता में, ईर्ष्या का होना कोई अनहोनी बात नहीं। ईर्ष्या तो दो के बीच में भी होती है। इसलिए आप इसे सहज भाव से लें और मिले हुए अवसरों का टीकाओं को नकारते हुए पूर्ण लाभ उठायें। यदि आप दूसरों की ईर्ष्या देखकर रूक गये तो आपकी प्रगति रूक जायेगी।

दो समान व्यक्ति परम मित्र हों, उनमें एक-दूसरे की योग्यताओं के प्रति सम्मान की भावना हो, वे दूसरे को आगे बढ़ता देख उसे सहयोग दें - ये है हमारे संगठन की शोभा। हम एक ऐसा संगठन बना लें जिसमें सभी को अपनी-अपनी योग्यता अनुसार आगे बढ़ने का क्षेत्र सुलभ हो, जहां कोई किसी के पैर पीछे न खींचे। ऐसा संगठन, जिसमें सभी महान् हों, स्थिति में भी महान् व गुण और योग्यताओं में भी श्रेष्ठ, इस विश्व में चमत्कारिक कार्य कर सकता है।

जो दूसरों के पैर पीछे खींचते हैं, उनके पैर खींचने वाले पीछे ही खड़े होते हैं। जो दूसरों से ईर्ष्या करते हैं, उनसे ईर्ष्या करने वालें की कमी नहीं होती परन्तु जो गिरतों को उठाते हैं, जो सहयोग देकर दूसरों को योग्य बनाते हैं, वे महान् बन जाते हैं। ईर्ष्या ने अंगुली माल को एक भयानक डाकू बनाया था। ईर्ष्या-वश मनुष्य दूसरों की शिकायत करता है, दूसरों को गिराना चाहता है। ईर्ष्या का माहौल, शिकायतों का महौल संगठन की नींव को निर्बल करता है। तो जैसे हम यह चाहते हैं कि हमसे कोई ईर्ष्या न करे, वैसे ही हमें भी दूसरों के प्रति ईर्ष्या से मुक्त होना चाहिए।

योग साधना के पथ पर महान् लक्ष्य रखने वालों को इस दुर्गुण से दूर रहना चाहिए। जो आनन्द योग द्वारा ईश्वरीय मिलन में है, वह आनन्द सेवा से प्राप्त ख्याति में कहां है? परन्तु यश व ख्याति कहीं-कहीं मनुष्य को भिखारी बना देती है और वह उसी के लिए अवसरों की तलाश में जुट जाता है। सच्चे योगियों को इस मृगतृष्णा में नहीं भटकना चाहिए। योगाभ्यास ही प्रगति का ऐसा पथ है जिसमें हमें कोई नहीं रोक सकता। इसलिए अधिकारी बनकर अवसर प्राप्त करो, मांग कर नहीं। भले ही तुम्हें इन्तजार करना पड़े, परन्तु उस इन्तजार का फल बड़ा ही स्वादिष्ट होगा।

दूसरे आगे बढ़ रहे हैं, हमें ईर्ष्या न हो। सभी अपना-अपना भाग्य ले रहे हैं, पुण्यों का या भक्ति का फल प्राप्त कर रहे हैं। हम भी आगे बढ़ने के लिए योग्य बनें, पुण्य कर्म करें, दूसरों के सहयोगी बनें। यह सोचकर निराश न होना कि हमें तो कोई अवसर देता ही नहीं, हमें तो कोई आगे बढ़ाता ही नहीं। याद रहे - आगे बढ़ने वालों को संसार की कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती।

जब एक नया व्यक्ति हमारे परिवार में आता है, जो कि उच्च शिक्षा प्राप्त है, हर तरह से सम्पन्न है, सेवाओं में उमंग-उत्साह रखता है, जो स्वयं सेवाओं में आगे बढ़ता है तो पुरानों को उससे ईर्ष्या होने लगती है। परन्तु, बड़ों को अपना त्याग करके छोटों के आगे बढ़ने में सहयोग देना चाहिए, इससे ये ईश्वरीय कार्य तीव्रता से आगे बढ़ेगा।

तो हे विश्व को शीतलता प्रदान करने वालो, देखों कहीं तुम स्वयं ईर्ष्या की अग्नि में तो नहीं जल रहे हो? यदि तुम भी इस अग्नि के शिकार हुए तो तुम जैसे थे वैसे ही रह जाओगे, शिव शक्ति-पाण्डव सेना कदापि नहीं बन पाओगे। इस स्वभाव से ऊपर उठो। तुम्हें तो विश्व कल्याण करना है। विश्व-कल्याणकारी किसी के प्रति ईर्ष्या कैसे रख सकते हैं। तुम्हें तो सबसे ऊंची चोटी पर चढ़ना है। यदि तुम ईर्ष्या-द्वेष के शिकार बने रहे तो तुम इस महान् लक्ष्य को कैसे प्राप्त करोगे। उठो, इस कलियुगी प्रभाव से ऊपर उठो। इससे मुक्त होना ही तुम्हारी यथार्थ प्रगति है। ईर्ष्या-वश बड़े काम करना भी कनिष्टता है। तुम्हारे मन के किसी भी कोने में यदि यह अग्नि जल रही हो तो उसे ज्ञानामृत के छींटों से शांत करो। न स्वयं रूको, न किसी को रोको। यदि तुम ईर्ष्या से मुक्त न हुए तो ईश्वरीय मिलन का सच्चा सुख कैसे प्राप्त करोगे।

दुमका (झारखण्ड) । झारखण्ड के राज्य पाल महामहिम डॉ. सैयद अहमद को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु जयमाला।

सहारनपुर । सिद्धपीठ माँ शाकुम्भरी देवी मेले के प्रांगण में ब्रह्माकुमारीज द्वारा लगाये गये १२ ज्योर्तिलिंगम मेला के अवसर पर ब्र.कु. उर्मिला को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित करते हुए जिला पंचायत चेयरमैन श्रीमति अनीता।

टोहाना (जींद) । कालवन गाँव में ब्रह्माकुमारीज पाठशाला के भवन का उद्घाटन करते हुए सरपंच को सौगात देते हुए ब्र.कु. विजय एवं ब्र.कु. बाला ।

मुरगूड । 'विश्व कल्याणी भवन' के उद्घाटन के समय रणजीत सिंह पाटिल (गोकुल दूध संचालक कोल्हापुर) इनको ईश्वरीय सौगात देते हुए राजयोगिनी सुनंदा ।

सादडी। मुण्डारा के भोपाजी एव सिरोही के विधायक साहब उटाराम देवासी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में बैठे ब्र.कु. शुचि एवं ब्र.कु. शालिनी।

गाजियाबाद । ब्र.कु. सुतीश , पंडित राकेश शास्त्री राष्ट्रवादी शिव सेना के प्रदेश अध्यक्ष महेश आहूजा रामलीला समिति के शंकर राठी, बी.जे.पी. भूपेन्द्र तथा अन्य।